Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 2, October-2020, ISSN 2230-7540

बुनियादी ढांचा और सेवाएं: विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में आईसीटी पर एक अध्ययन

Parul Shrivastava[1]*, Dr. Mohan Lal Kaushal[2]

[1] Research Scholar, Sri Krishna University

[2] Associate Professor, Sri Krishna University

सार - *आईसीटी कहीं भी, कहीं भी, एक कोने से दूसरे कोने में सूचना साझा करने में मदद करता है। व्यावसायिक संगठन की कोई भी सफलता अच्छे बुनियादी ढांचे, परिवहन और संचार आदि पर निर्भर करती है। जैसा कि विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों में भी उचित माध्यम के माध्यम से बुनियादी ढांचे और परिवहन को विकसित करने की आवश्यकता होती है। मध्य प्रदेश विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की गतिविधियों और सेवाओं के लिए आईसीटी का आवेदन विभिन्न कारकों के कारण अपर्याप्त समस्या प्रतीत होता है, जिसमें देश के बुनियादी ढांचे के विकास की स्थिति, भौगोलिक स्थिति के कारण अनुचित परिवहन और संचार, पुस्तक सामग्री के स्थान की खोज शामिल है।*

कीवर्ड - *बुनियादी ढांचा, सेवाएं, विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, आईसीटी।*

----------X----------

परिचय

संस्थानों में अकादमिक पुस्तकालयों की गतिविधियों और सेवाओं के लिए आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकियों का अनुप्रयोग शायद विभिन्न कारकों के कारण अपर्याप्त लगता है, जिसमें मानव कारक, भय और देश के ढांचागत विकास की स्थिति शामिल है । (1) कुछ पुस्तकालय चिकित्सकों का यह भी मानना है कि आईटी अनुप्रयोगों के उपयोग से शायद ही बहुत अधिक लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं जिससे मैनुअल पुस्तकालय संचालन के लिए प्राथमिकताएं मिल सकती हैं। जो लोग इसके लाभों के बारे में जानते हैं, वे अपनी नौकरी से समाप्त होने से डरते हैं; हालांकि जानते हुए भी कि इस तरह के प्रशासन, अधिग्रहण, सूचीकरण और वर्गीकरण, परिसंचरण, सूचना पुनर्प्राप्ति और धारावाहिकों नियंत्रण के रूप में पुस्तकालय दिनचर्या के लिए अपने आवेदन प्रभावी और कुशल नौकरी के प्रदर्शन की सुविधा होगी ।

पुस्तकालय सेवाओं में सूचना प्रौद्योगिकी का आवेदन

विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में, कई प्रणालियों को उनके विभिन्न घर रखने के काम के लिए विकसित किया गया है और बड़े पैमाने पर एकीकरण की तकनीक के कारण अभी भी डिजाइन और परिष्कृत किया जा रहा है। इन्हें माइक्रोकंप्यूटर के रूप में जाना जाता है; अधिग्रहण, कैटलॉगिंग, धारावाहिक नियंत्रण, परिसंचरण नियंत्रण, ग्रंथसूची नियंत्रण, या सूचना का चयनात्मक प्रसार (एसडीआई) जैसी किसी भी पुस्तकालय प्रक्रिया को संभालने के लिए डिज़ाइन किया गया है। आईसीटी ने उपयोगकर्ताओं को बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के कई सेवाओं का लाभ उठाने में सक्षम बनाया है, एलआईएस पेशेवर की भूमिका मध्यस्थ से एक सुविधा और संबल में बदल रही है। आईसीटी सक्षम सेवाओं के रूप में श्रेणियों जा सकता है: (2)

- आईसीटी सक्षम पारंपरिक एलआईएस, जिसे आईसीटी के उपयोग के माध्यम से अधिक कुशलता से वितरित किया जा सकता है, और
- नई सेवाएं, जो आईसीटी में विकास के कारण संभव बनाई गई हैं।

ऑटोमेशन और डिजिटाइजेशन

नई सहस्राब्दी की शुरुआत से ही लाइब्रेरी ऑटोमेशन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी। शुरू में यह दो व्यक्तिगत कंप्यूटर के साथ शुरू होता है। इंटरनेट कनेक्टिविटी के

www.ignited.in

साथ न्यूनतम शुल्क के साथ पुस्तकालय में एक साइबर कैफे जोड़ा गया और बाद में इसे निशुल्क बनाया गया। वर्तमान में हमारे पास आवधिक अनुभाग से जुड़ी एक ई-संसाधन इकाई है। प्रारंभिक चरण में पुस्तकालय की हाउसकीपिंग गतिविधियों के लिए, हमने एक लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर आत्मा खरीदा जिसे यूजीसी के तहत एक स्वायत्त इन्फ्लिबनेट द्वारा विकसित किया गया था। अभी तक डिजिटाइजेशन का सवाल है, 2001 से 2006 तक के पीएच डी थेरे आईसीएआर प्रायोजित परियोजना कृषिप्रभा के तहत डिजिटाइज्ड किए गए थे। पुस्तकालय संग्रह की भारी संख्या के ग्रंथसूची डेटाबेस के निर्माण के लिए पहले से ही प्रक्रिया चल रही है। पुस्तकालय संग्रह के 60,000 से अधिक ग्रंथसूची रिकॉर्ड को पहले ही डिजिटाइज्ड किया जा चुका है। (3)

पुस्तकालय में आईसीटी की भूमिका

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) पूर्व पुस्तकालय और सूचना केंद्र को एक नए आईसीटी सुविधायुक्त पुस्तकालय में बदलने के लिए सबसे क्रांतिकारी प्रेरक शक्ति है। पारंपरिक पुस्तकालय प्रणाली यानी स्टोर हाउस की अवधारणा आईसीटी सक्षम पुस्तकालय, आभासी पुस्तकालय, डिजिटल पुस्तकालय, हाइब्रिड पुस्तकालय, मिश्रित पुस्तकालय में बदल गई है, विभिन्न सेवाओं और पुस्तकालयों के प्रबंधन में आईसीटी के जबरदस्त परिवर्तन के साथ। आईसीटी की इस व्यापक परिभाषा में रेडियो, टेलीविजन, वीडियो, डीवीडी, टेलीफोन, सैटेलाइट सिस्टम, और कंप्यूटर और नेटवर्क, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर जैसी तकनीकों के साथ-साथ इन तकनीकों से जुड़े उपकरण और सेवाएं, जैसे वीडियोकांफ्रेंसिंग, ई-मेल शामिल हैं। और ब्लॉग।

मध्य प्रदेश में आईसीटी बुनियादी ढांचे का विकास

मानव विकास में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका इस क्षेत्र में और अंतरिक्ष विज्ञान में राष्ट्र द्वारा की गई तीव्र प्रगति के साथ एक वास्तविकता बन गई है। इस अध्याय में, हम मानव विकास और आईसीटी के बीच संबंधों पर चर्चा करते हैं। संचार अवसंरचना व्यक्तियों और समाज के लिए उपलब्ध विकल्पों का एक विस्तार प्रदान करती है ताकि उन्हें पूर्ण और बेहतर जीवन जीने में सक्षम बनाया जा सके। मौजूदा सेवाओं और प्रौद्योगिकी के मौजूदा रूपों के साथ आईसीटी साझेदार उन्हें सस्ती दर पर अधिक से अधिक लोगों तक तेजी से पहुंचाने के लिए और संचार बुनियादी ढांचे के लिए समान पहुंच होने पर अधिक विस्तृत और व्यापक मंच प्रदान करता है।

विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में आईसीटी का बुनियादी ढांचा और उपयोग

आज पुस्तकालय और सूचना प्रणाली के प्रबंधन में कंप्यूटर का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। पुस्तकालयों में कंप्यूटर के अनुप्रयोग को विभिन्न रूप में जाना जाता है: पुस्तकालय स्वचालन, पुस्तकालय कम्प्यूटरीकरण, पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) का उपयोग, पुस्तकालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का उपयोग, आदि। व्यवहार में, ये सभी शब्द लगभग एक ही उपकरण को कवर करते हैं। और कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, स्वचालित उपकरण, वर्ड प्रोसेसर, सॉफ्टवेयर, उपग्रह और दूरसंचार प्रौद्योगिकियों, इलेक्ट्रॉनिक भंडारण मीडिया और नेटवर्किंग प्रौद्योगिकियों जैसे लैन, वैन के विभिन्न संस्करणों के उपयोग से पुस्तकालय के हाउसकीपिंग संचालन, सेवाओं और सूचना के प्रसार के प्रबंधन के लिए संचालन। , इंटरनेट आदि।

आईसीटी के माध्यम से उपयोगकर्ता की सेवाएं

आईसीटी में लाइब्रेरी का उपयोग उपयोगकर्ताओं को बेहतर सुविधाएं और सेवाएं प्रदान करना है। मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपयोगकर्ताओं को प्रदान की जा रही कम्प्यूटरीकृत सेवाओं का स्तर, अध्ययन के तहत मध्य प्रदेश के कुल विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में से, सभी पुस्तकालय कम से कम तीन कम्प्यूटरीकृत सेवाएं प्रदान करते हैं। कमोबेश, राज्य के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपयोगकर्ताओं के लिए कुल तेरह कम्प्यूटरीकृत सेवाएं उपलब्ध हैं। रिप्रोग्राफिक सेवाएं इंटरनेट सुविधा और पत्रिकाओं की ऑनलाइन खोज सभी विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं, जबकि दस्तावेजों का आरक्षण, एसडीआई, इन-हाउस इंडेक्सिंग और एब्सट्रैक्टिंग सेवाएं राज्य के किसी भी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में प्रदान नहीं की जाती हैं। नए आगमन की कम्प्यूटरीकृत सूची 75% पुस्तकालयों में प्रदान की जाती है और उपयोगकर्ताओं द्वारा ई-मेल या सीडी के माध्यम से भेजी गई पुस्तक-मांग सूची 62.5% विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में स्वीकार की जाती है। (4)

आईसीटी के कार्यान्वयन में समस्याएं

महत्वपूर्ण बाधाओं और आईसीटी के उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों को मान्यता दी गई है, मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों को आईसीटी के उपयोग में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि, अधिकांश समस्याएं आईसीटी बुनियादी ढांचे और परिचालन कर्मचारियों के बुनियादी प्रबंधन के माध्यम से होती हैं। कमोबेश राज्य के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में कुल 18 समस्याओं की पहचान की गई है। सभी विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी और आईटी प्रशिक्षित कर्मचारियों की अनुपलब्धता, दस्तावेजों के रेट्रो रूपांतरण और बार कोडिंग में देरी, बेहतर प्रदर्शन के लिए कर्मचारियों को प्रेरणा की कमी और पुस्तकालयों में उपयोग किए जाने वाले आईटीसी में लगातार बदलाव की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। 87.5% विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में अपर्याप्त हार्डवेयर और विश्वविद्यालय प्रबंधन से अपर्याप्त समर्थन की समस्याएं अनुभव की जाती हैं।

साहित्य की समीक्षा

सेल्वा कुमारी,(2009) लेखक एक इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक (ई बुक्स) पर चर्चा दोनों एक इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में पारंपरिक पुस्तकों की बुनियादी विशेषताओं की नकल पर आधारित है, साथ ही इंटरनेट प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए एक ई किताब आसान और उपयोग करने के लिए कुशल बनाने के लिए । इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक (ई-पुस्तकें) वैश्विक 24 घंटे-एक दिन और आधिकारिक जानकारी के लिए सप्ताह में 7 दिन पहुंच के साथ डिजिटल पुस्तकालय को बढ़ाने का एक तरीका है, और वे उपयोगकर्ताओं को आसानी से आसानी से, जल्दी और प्रभावी ढंग से विशिष्ट अनुसंधान सामग्री को जल्दी से पुनः प्राप्त करने और उपयोग करने में सक्षम बनाते हैं। (5)

त्रिपाठी ,(2008) लेखक ने कहा है कि उड़ीसा में प्रबंधन संस्थान पुस्तकालयों द्वारा नेटवर्क आधारित पुस्तकालय और सूचना सेवाओं के उपयोग की जांच करने के लिए । यह स्टाफ, संग्रह, इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों और पुस्तकालय स्वचालन जैसे विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है। यह सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की उपयोगिताओं को प्रस्तुत करता है जो उपयोगकर्ता को डेटा, सूचना और ज्ञान का उपयोग, विश्लेषण, निर्माण, आदान-प्रदान और उपयोग करने में मदद करता है । (6)

केम्पाराजु ,(2007) लेखक का कहना है कि पुस्तकालय सेविकाओं के लिए सार्वजनिक मांग न केवल अत्यधिक बढ़ी है बल्कि अधिक विविध भी होती जा रही है । यह शिक्षा और अनुसंधान, सामुदायिक विकास और राष्ट्र निर्माण कार्यक्रमों के लिए केंद्रीय के रूप में पुस्तकालयों की व्यापक स्वीकृति के कारण है । पुस्तकालयों को जनता को पर्याप्त और प्रभावी सेवाएं प्रदान करके इस महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करने की उम्मीद है । यह सामान्य रूप से सार्वजनिक पुस्तकालयों की अवधारणा के साथ-साथ नई और उभरती तकनीकी व्यवस्था के आलोक में भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थिति की जांच करता है । (7)

सीओ अजीदाहुनो ,(2007) लेखक कर्मचारियों की प्रशिक्षण जरूरतों पर चर्चा करता है, प्रशिक्षण तकनीकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कर्मचारियों के विकास की प्रक्रियाओं के लाभों पर प्रकाश डालता है । नाइजीरिया में इक्कीस विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के अध्ययन में भाग लिया । परिणाम से पता चलता है कि कई अकादमिक पुस्तकालयाध्यक्ष और पुस्तकालय के अन्य श्रेणियों के कर्मचारी कंप्यूटर साक्षर नहीं हैं । अध्ययन से आगे पता चलता है कि नाइजीरियाई विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी में कर्मचारियों के विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम घोर अपर्याप्त हैं । (8)

बोर्स, (2006) लेखक चर्चा करता है कि सूचना स्रोतों को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है: मुद्रित और गैर-मुद्रित। जानकारी के गैर मुद्रित स्रोत डिजिटाइज्ड सूचना स्रोतों के पूर्वज हैं। जानकारी है, जो इलेक्ट्रॉनिक संग्रहीत किया गया है और मशीन के माध्यम से तुरंत प्राप्त डिजिटाइज्ड जानकारी है । डिजिटाइज्ड सूचना स्रोत नए युग की अवधारणा है, जिसने सूचना संग्रह, संरक्षण, पुनर्प्राप्ति और प्रसार की प्रक्रिया में काफी अभूतपूर्व बदलाव लाए । डिजिटाइज्ड जानकारी स्रोत वे स्रोत हैं जो डिजिटल जानकारी के लिए एकत्र, संरक्षित और प्रबंधित डिजीटल मशीन पठनीय जानकारी में होते हैं। (9)

इस्लाम, (2005) लेखक डिजिटल पुस्तकालयों के विकास पर चर्चा की रचना, उपयोग, उपयोग और जानकारी के मैनेजमैट में महत्वपूर्ण परिवर्तन के साथ चल रहा है । यह डिजिटल पुस्तकालयों के डिजाइन, विकास और प्रबंधन के लिए प्रमुख गतिविधियों और कौशल के सेट की पड़ताल और रूपरेखा तैयार करता है। ये कौशल चार व्यापक श्रेणियों के हैं: सूचना संचार प्रौद्योगिकी

www.ignited.in

(आईटीसी) कौशल, सूचना कौशल, प्रबंधन कौशल और अनुसंधान और परियोजना प्रबंधन कौशल । (10)

अंजलि वतन ,(2005) लेखक पुस्तकालय पेशेवरों कंप्यूटर साक्षरता और अमरावती शहर के कॉलेज पुस्तकालयों में आईटी के उपयोग के कागज पर चर्चा की । लेखकों ने लाइब्रेरियन की कंप्यूटर साक्षरता और कॉलेज पुस्तकालयों में आईटी के उपयोग के अनुपात का पता लगाने के लिए चयनित कॉलेज पुस्तकालयों का एक प्रश्नावली सर्वेक्षण किया । इस अध्ययन का निष्कर्ष यह था कि 38 कॉलेजों में से 14 कॉलेजों का चयन इंजीनियरिंग कॉलेजों सहित किया गया था जो पुस्तकालयों में पुस्तकालय पेशेवरों और आईटी आवेदन के आईटी जागरूकता को शामिल करते हैं। (11)

कुमार, (2004) लेखक उत्तर-पूर्वी हिल विश्वविद्यालय का एक संक्षिप्त स्केच प्रदान करता है । यह पुस्तकालय में स्वचालन की जरूरतों पर प्रकाश डाला गया है और इसके आलोक में यह तुरा परिसर पुस्तकालय में स्वचालन के काम पर चर्चा करता है। यह एक पुस्तकालय के स्वचालन के लिए हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और पुस्तकालय कर्मचारियों के प्रशिक्षण के चयन से संबंधित है। यह नेहू तुरा कैंपस लाइब्रेरी के स्वचालन कार्य का भी मूल्यांकन करता है। नेहू टीसी लाइब्रेरी को सेवाओं के टोह ऑटोमेशन और नेटवर्किंग के दौरान विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ा। (12)

अध्ययन के उद्देश्य

- मध्य प्रदेश में स्थित विश्वविद्यालय पुस्तकालयों का बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण करना।
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और पुस्तकालयों के विकास को उजागर करना।
- आईसीटी के आवेदन का आकलन करने के लिए, इन पुस्तकालयों द्वारा उनकी विभिन्न सेवाओं और गतिविधियों की जाँच करना।

अनुसंधान क्रियाविधि

अनुसंधान पद्धति अध्ययन के लिए उठाए गए प्रकृति और समस्या की पहचान करने के लिए पहला कदम है। "एक शोधकर्ता की कार्रवाई के अनुक्रम को स्पष्ट रूप से और तार्किक रूप से दिखाने के लिए कार्यप्रणाली तैयार की जाती है, जिसके द्वारा जांच अंततः अपने संरचनात्मक तक पहुंच जाती है"।

अध्ययन के लिए प्रासंगिक डेटा के संग्रह के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए:

साहित्य सर्वेक्षण

अध्ययन सूचना वैज्ञानिक या लाइब्रेरियन द्वारा प्रस्तावित दिए गए विषय पर पूर्ण जीवनी संदर्भ प्रकाशित पुस्तकों और लेखों के साथ लिस्टिंग द्वारा शुरू की। इन्हें करंट पब्लिकेशन सर्वे भी कहा जाता है। इस प्रकार के अध्ययन के लिए संग्रह की प्रकृति की जांच और मूल्यांकन करने के लिए शोधकर्ता द्वारा आमतौर पर किया जाता है। इस तरीके का विशेष रूप से शोधकर्ता द्वारा वर्तमान आवधिक में मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में विषय यानी आईसीटी आवेदन की स्पष्ट कटौती समझ के लिए उपयोग किया। अनुसंधान प्रक्रिया में इन कदमों ने प्रश्नावली तैयार करने में मदद । उपरोक्त स्रोत को पिछले कार्यों की संपीड़न समीक्षा को ध्यान में रखते हुए बहुत जरूरी हो गया हैं। इससे साहित्य खोज को इसके दायरे को सीमित करने में मदद मिलती हैं । इसलिए, साहित्य की समीक्षा के लिए स्रोत ऐसे समय में बहुत सहायक हो जाते हैं। वर्तमान अध्ययन के लिए नीचे दिए गए स्त्रोतों की सूचियों पर परामर्श किया जाता है। दूसरे शब्दों में, वे अध्ययन के साहित्य की समीक्षा के लिए स्रोत हैं ।

- सूचकांक
- लेखों
- संदर्भ
- पत्रिकाएं और समीक्षाएं
- विश्वविद्यालय में उपलब्ध थीसिस और शोध प्रबंध

प्रश्नावली

वर्तमान अध्ययन भी साहित्य सर्वेक्षण और साक्षात्कार तकनीक के अलावा डेटा इकट्ठा करने के लिए एक उपकरण के रूप में संरचित प्रश्नावली तरीकों का उपयोग किया। इसका उद्देश्य जानकारी की वैधता और विश्वसनीयता प्राप्त करना है, ताकि शोध प्रश्न का उत्तर दिया जा सके।

प्रश्नावली के फायदे के रूप में उल्लेख:

- न्यूनतम लागत
- उत्तरदाताओं को एक मुक्त हाथ दें ताकि वे

समय बर्बाद किए बिना उत्तर को संशोधित और तैयार कर सकें।

- आसान वितरण।
- डेटा विश्लेषण के समय उत्तरों का सारणीकरण आसान है।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान अध्ययन क्षेत्र मध्य प्रदेश राज्य के विश्वविद्यालय पुस्तकालय है।

प्रश्नावली का वितरण

डेटा संग्रह: डेटा संग्रह को तथ्यों और आंकड़ों के संग्रह में शामिल होने के कारण अनुसंधान पद्धति में सबसे महत्वपूर्ण चरणों या अनुक्रम में से एक माना जाता है। शोधकर्ता ने आवश्यक डेटा एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत रूप से प्रस्तावित क्षेत्र का दौरा किया और प्रश्नावली व्यक्तिगत रूप से वितरित की थी।

साक्षात्कार: उत्तरदाताओं के व्यक्तियों में प्रश्नावली के वितरण के समय के दौरान उनके भारी अनुसूचित के बावजूद साक्षात्कार के लिए किया।

उत्तर: अध्ययन की प्रश्नावली का कुल जवाब चौदह (14) वितरित प्रश्नावली में से तेरह (13) था।

डेटा विश्लेषण

एकत्र किए गए डेटा को सांख्यिकीय तरीकों के माध्यम से प्रस्तुति के लिए कंप्यूटर में माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल सॉफ्टवेयर पैकेज द्वारा व्यवस्थित, विश्लेषण और टेबुलर रूप में काटा था। निम्नलिखित सांख्यिकीय तरीके हैं जिनसे संपर्क किया था, नियोजित और इकट्ठा किया जासके।

परिणाम विश्लेषण

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आज की वैश्वीकृत दुनिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसा कि यह हर संगठन की आधारशिला बन रहा है, यह संगठन की संरचना और प्रबंधन और वितरण प्रक्रिया में बहुत बड़ा बदलाव ला रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) विषयों के बहु-विषयक क्षेत्रों में ज्ञान के ब्रह्मांड में दुनिया भर में लगातार उत्पन्न जानकारी को प्राप्त करने, भंडारण, प्रसंस्करण, पुनर्प्राप्त करने और वितरित करने की प्रक्रिया में मूलभूत परिवर्तन लाती है।

संस्था का ज़िलावार वितरण

विचाराधीन नमूने की पृष्ठभूमि की जानकारी तालिका 1 में दर्शाई गई है। अध्ययन के उद्देश्य के लिए मध्य प्रदेश भारत के चौदह (14) विश्वविद्यालय पुस्तकालयों पर विचार किया गया है। 14 वितरित प्रश्नावली में से केवल तेरह (13) ने उत्तर दिया, प्रतिक्रिया दर 92.86% है।

तालिका **1:** संस्थाओं का ज़िलावार विभाजन

ज़िला	**विश्वविद्यालय की संख्या/ संस्थान**	**प्रतिशत**
भोपाल	2	15.4
इंदौर	1	7.7
ग्वालियर	1	7.7
जबलपुर	6	46.2
सागर	1	7.7
उज्जैन	1	7.7
छतरपुर	1	7.7
कुल	13	100.0

विश्वविद्यालयों/संस्थानों में आईसीटी अवसंरचना

वर्कस्टेशन (पीसी): एक संस्थान में वर्कस्टेशन की अधिकतम संख्या 80 बताई गई है जो सागर में है। इस मामले में भी जबलपुर में दो संस्थानों, भोपाल और उज्जैन के एक-एक ने बताया कि उनके पास कोई

www.ignited.in

वर्कस्टेशन नहीं है। अध्ययन के बाकी संस्थानों में कम से कम 10 वर्कस्टेशन हैं (तालिका 2)।

तालिका 2: वर्कस्टेशन (पीसी)

ज़िला	वर्कस्टेशन									कुल
	0	10	15	16	21	30	35	50	80	
भोपाल	1	0	0	0	0	0	0	1	0	2
इंदौर	0	0	1	0	0	0	0	0	0	1
ग्वालियर	0	0	1	0	0	0	0	0	0	1
जबलपुर	2	0	0	1	1	1	1	0	0	6
सागर	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1
उज्जैन छतरपुर	1 0	0 1	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0	1 1
कुल	4	1	2	1	1	1	1	1	1	13

अधिकांश संस्थान जो **11 (84.62%)** विश्वविद्यालय/संस्थान हैं, अपने पुस्तकालय में सीडी नेट सर्वर सुविधा प्रदान नहीं करते हैं और शेष **2 (22.22%)** केवल एक सीडी सर्वर सुविधा प्रदान करते हैं। अध्ययनाधीन सभी ज़िला सरकार के संस्थानों और **7 (77.78%)** केंद्र सरकार के संस्थानों ने सीडी नेट सर्वर की सुविधा प्रदान नहीं की है। केवल **2(22.22%)** केंद्र सरकार की संस्था ने केवल एक सीडी नेट सर्वर टावर सुविधा प्रदान की। (तालिका **3**)।

तालिका 3: आईसीटी अवसंरचना

विवरण	मात्रा	संगठन का प्रकार				कुल	%
		ज़िला सरकार	%	केन्द्रीय सरकार	%		
सर्वर	0	1	25.00	2	22.22	3	23.08
	1	2	50.00	3	33.33	5	38.46
	2	1	25.00	3	33.33	4	30.77
	3	0	0.00	1	11.11	1	7.69
वर्कस्टेशन	0	2	50.00	2	22.22	4	30.77
	<20	1	25.00	3	33.33	4	30.77
	20-40	1	25.00	2	22.22	3	23.08
	>40	0	0.00	2	22.22	2	15.38
व्यक्तिगत प्रिंटर	5 तक	3	75.00	7	77.78	10	76.92
	इससे अधिक 5	1	25.00	2	22.22	3	23.08
बारकोड प्रिंटर	0	1	25.00	4	44.44	5	38.46
	1-2	2	50.00	4	44.44	6	46.15
	3-4	1	25.00	1	11.11	2	15.38
बारकोड स्कैनर	1	1	25.00	3	33.33	4	30.77
	2	3	75.00	5	55.56	8	61.54
	3	0	0.00	1	11.11	1	7.69
सीडी नेट सर्वर	0	4	100.00	7	77.78	11	84.62
	1	0	0.00	2	22.22	2	15.38
सीडी रॉम टॉवर	0	4	100.00	7	77.78	11	84.62
	1 और अधिक	0	0.00	2	22.22	1	7.69
यूपीएस 10 केवीए	0	1	25.00	5	55.56	6	46.15
	1-3	3	75.00	3	33.33	6	46.15
	4-6	0	0.00	1	11.11	1	7.69
जेनरेटर	0	2	50.00	6	66.67	8	61.54
	1	2	50.00	3	33.33	5	38.46
फ़ायरवॉल	0	3	75.00	8	88.89	11	84.62
	1	1	25.00	1	11.11	2	15.38
कुल		**4**	**100.00**	**9**	**100.00**	**13**	**100.00**

दस्तावेजों का डिजिटलीकरण

तालिका 4: दस्तावेजों का डिजिटलीकरण

ज़िला	दस्तावेजों का डिजिटलीकरण शुरू		कुल
	नहीं	हां	
भोपाल	1	1	2
इंदौर	0	1	1
ग्वालियर	0	1	1
जबलपुर	3	3	6
सागर	0	1	1
उज्जैन छतरपुर	1 0	0 1	1 1
कुल	5	8	13

निष्कर्ष

पारंपरिक पुस्तकालय प्रणाली कई समस्याओं से मुक्त है और इस प्रकार आईसीटी की आवश्यकता उत्पन्न होती है। रिकॉर्ड की गई जानकारी के आकार के कारण पुस्तकालय कार्यों का मैनुअल प्रदर्शन बहुत मुश्किल है, जो उपलब्ध स्थान की तुलना में लगातार बढ़ रहा है। हर साल पुस्तकालय की जगह बढ़ाना मुश्किल है, आईसीटी एक कोने से दूसरे कोने में किसी भी जगह जानकारी साझा करने में मदद करता है। व्यापार संगठन की कोई भी सफलता अच्छे बुनियादी ढांचे, परिवहन और संचार आदि पर निर्भर करती है ।

विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उचित चैनल के मार्ग के माध्यम से बुनियादी ढांचे और परिवहन विकसित करने की जरूरत है ।

संदर्भ

1. मिश्रा, जे (2003) । डिजिटल स्टोरेज मीडिया: इसकी देखभाल और हैंडलिंग। आईएएसएलआईसी बुलेटिन, 48 (2), 67-70 ।
2. एनजीईन, एमके (2008)। मैदुगुरी विश्वविद्यालय में कंप्यूटर के प्रति जागरूकता और महत्व। पुस्तकालय प्रगति (अंतर्राष्ट्रीय), 28 (2), 243-249 ।
3. सामी, एस जे (दिसंबर 2004) । एक विश्वविद्यालय के माहौल में इंटरनेट सेवा का प्रबंधन। सूचना प्रबंधन के एसआरईएलएस जर्नल, 41 (4), 349-359 ।
4. सुदीप्त चटर्जी, (2002) । इलेक्ट्रॉनिक कॉपीराइट और लाइब्रेरियन। IASLIC बुलेटिन, 47 (2), 97-106 ।
5. सेल्वाकुमार, एस एन (2009) । इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकें (ई-पुस्तकें): वर्तमान रुझान । इला बुलेटिन, 45 (3-4), 27-30 ।
6. त्रिपाठी, एनके (2008) । पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में संस्थागत स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क (लैन) उड़ीसा में प्रबंधन संस्थानों का एक मामला अध्ययन। आईएएसएलआईसी बुलेटिन, 53 (4), 247-254 ।
7. केम्पराजू, आर डब्ल्यू (जून 2007) । भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक सूचना सेवाएं प्रदान करने के अवसर और चुनौतियां। सूचना प्रबंधन के एसआरईएलएस जर्नल, 44 (2), 157-171 ।
8. सी.ओ अजीदाहुन। (2007) नाइजीरिया में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी में पुस्तकालय जनशक्ति का प्रशिक्षण, विकास और शिक्षा । विश्व पुस्तकालयों, 17 (1) ।
9. बोर्स, टी (2006) । डिजिटल सूचना संसाधन प्रबंधन। आईएएसएलआईसी बुलेटिन, 51 (2), 48-53 ।
10. इस्लाम, एम एच (2005) । डिजिटल लाइब्रेरी: अवधारणाएं। बांग्लादेश में मुद्दे और निहितार्थ । आईएएसएलआईसी बुलेटिन, 50 (4), 207-215 ।
11. अंजलि वाणे, ए (2005) । अमरावती शहर के कॉलेज पुस्तकालयों में पुस्तकालय पेशेवरों की कंप्यूटर साक्षरता और सूचना प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग का उपयोग। आईएएसएलआईसी बुलेटिन, 50 (3), 131-141 ।
12. कुमार, बी ए (दिसंबर 2007) । दूरस्थ शिक्षा पर वेब आधारित शिक्षण प्रौद्योगिकी का प्रभाव: एलआईएस शिक्षा के विशेष संदर्भ के साथ। जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 3 (2), 39-47 ।

Corresponding Author

Parul Shrivastava*

Research Scholar, Sri Krishna University